भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान,
खण्डवा रोड, इंदौर-452001

फाइल क्रमांक: सोयामहाकुम्भ/प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस नोट/ 2022/ 7 दिनांक : 31.05.2022

प्रेस नोट

सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनिकी, नवीनतम कृषि पद्धतियों एवं उन्नत किस्मों का सोया कृषकों में प्रचार प्रसार बढ़ाने के उद्धेश्य से सोयाबीन आधारित हितधारकों के लिए तीन दिवसीय कृषि प्रदर्शनी "सोया महाकुंभ" का आज देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के विश्वविद्यालय सभागार और प्रदर्शनी मैदान में समापन हुआ। इस महाकुम्भ का आयोजन भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान; सोयाबीन अनुसंधान और विकास सोसायटी; सोलीडारीडेड, भोपाल तथा सोपा, इंदौर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था, जिसमें मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान जैसे प्रमुख सोया उत्पादक राज्यों के 4300 सोया किसानों ने भाग लिया। समापन सत्र के दौरान भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान की कार्यवाहक निदेशक डॉ नीता खांडेकर ने बताया कि सोयाबीन की बुवाई के मौसम से ठीक पहले सोयाबीन उत्पादकों के तकनीकी ज्ञान को अद्यतन करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

सोया महाकुंभ के अंतिम दिन, मेले में भाग ले रहे किसानों के लिए "किसान सम्मान निधि का वितरण" और "गरीब कल्याण सम्मेलन" कार्यक्रम के सजीव प्रसारण की विशेष व्यवस्था की गई थी, जिसमें देश के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा केंद्र सरकार की ओर से देश के करोड़ों छोटे और सीमांत किसानों के बैंक खाते में सीधे 11,000 करोड़ रुपये जमा किए गए । इसके लिए इंदौर के माननीय सांसद श्री शंकर लालवानी जी की पावन उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान अपने उदबोधन में उन्होंने भाकृअनुप-आईआईएसआर द्वारा सोयाबीन की नई कृषि प्रौद्योगिकियों और पद्धतियों, नवीनतम किस्मों के प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया के उपयोग की सराहना की।

कार्यक्रम के दौरान, सोयाबीन अनुसंधान और विकास सोसायटी के अध्यक्ष डॉ संजय गुप्ता ने कहा कि उनकी सोसाइटी सोयाबीन आधारित अर्थव्यवस्था के शामिल हितधारकों के हित में प्रचार-प्रसार की गतिविधियों को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर सोया कृषकों के लिए अपने उत्पादों, प्रौद्योगिकियों और सलाहकार सेवाओं को प्रदर्शित करने वाले संगठनों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी स्टाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सरकारी श्रेणी में पहले तीन विजेता संस्थानों में कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य (प्रथम); आईसीएआर-केंद्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल (द्वितीय) और संयुक्त रूप से नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड एवं आईजीएफआरआई, झांसी (तृतीय)। इसी तरह निजी कंपनियों में विजेताओं में कृभको (प्रथम) बेयर क्रॉप साइंसेज (द्वितीय) तथा संयुक्त रूप से ईगल सीड्स एंड बायोटेक लिमिटेड और जेके पेपर शामिल थे (तृतीय पुरस्कार)। कार्यक्रम का समापन हर साल "सोया महाकुंभ" का आयोजन जारी रखने की घोषणा के साथ किया गया। अंत में आयोजन सचिव डॉ मनोज श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद् ज्ञापन के साथ सोया महाकुम्भ के समापन की घोषणा की गई।

....

ICAR-Indian Institute of Soybean Research
Khandwa Road, Indore (M.P.) 452001

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान,

खण्डवा रोड, इंदौर-452001

फाइल क्रमांक: सोयामहाकुम्भ/प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस नोट/ 2022/ 6 दिनांक : 30.05.2022

<u>प्रेस नोट</u>

भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान तथा सोसाइटी फॉर सोयाबीन रिसर्च एंड डेवलपमेंट, सॉलिडरीडाड, भोपाल, सोपा इंदौर द्वारा संयुक्त रूप से देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, तक्षशिला परिसर, खण्डवा रोड, इन्दौर के सभागार में आयोजित "सोया महाकुम्भ" कार्यक्रम के दूसरे दिन 30.05.2022 को कृषकों के लिए दो तकनिकी सत्रों का आयोजन किया गया. इनमे से प्रथम सत्र "फंटास्टिक सेवन – फ़ूड, फोडर, फ्यूल, फ़र्टिलाइज़र मेडिसिनल एवं कोस्मेटिक्स में सोयाबीन " शीर्षक पर डॉ. सुधा मैसूर, सी.ई.ओ., एग्री इनोवेट इंडिया, दिल्ली की अध्यक्षता में संपन्न हुआ. जबकि विशेषज्ञ के रूप में श्री सुमित के अग्रवाल, निदेशक, जैव पोषक तत्व (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, डॉ दीपिका, केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल; डॉ. एम.एम. अंसारी, पूर्व-पीएस, भाकृअनुप-आईआईएसआर, इंदौर, डॉ लोकेश मीणा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-आईआईएसआर, इंदौर, डॉ. आर.के वर्मा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-आईआईएसआर इंदौर, ने कृषकों के सवालों एवं शंकाओं का निराकरण किया. इस तकनिकी सत्र का समन्वयन डॉ मनोज श्रीवास्तव द्वारा किया गया.

द्वितीय तकनिकी सत्र "सतत सोयबीन उत्पादन हेतु आधुनिक प्रसार प्रणालियाँ" विषय पर डॉ शिव कुमार अग्रवाल, इंटरनेशनल सेंटर फोर ड्रायलैंड एग्रीकल्चर, फ़ूड लेगुम की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसका समन्वयन डॉ बी.यू. दुपारे, प्रधान वैज्ञानिक, आई.आई.एस.आर ने किया. इस अवसर पर विशेषज्ञ के रूप में डॉ सुरेश मोटवानी, सॉलिडरीडाड, भोपाल; डॉ डी.एन.पाठक, कार्यकारी निदेशक, सोपा इंदौर, डॉ अमरनाथ शर्मा, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, डॉ राघवेन्द्र मदार, डॉ संजीव कुमार तथा मंथन संस्था के डॉ रजत सक्सेना ने कृषकों की समस्याओं का निराकरण किया.

इससे पूर्व सोया महाकुम्भ के उद्घाटन समारोह में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के महानिदेशक डॉ त्रिलोचन महापात्र द्वारा विभिन्न राज्यों से सोयाबीन की खेती में नवाचार करने वाले तथा अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने वाले निम्न किसानों को उनके द्वारा उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया. ये हैं; श्री गजानंद (जिला इंदौर, मध्य प्रदेश), 2. श्री रशपाल (उतर प्रदेश), 3. श्री बनेसिंह चौहान (जिला धार, मध्य प्रदेश), 4. श्री कुमार मगदुम (कर्नाटक), 5. श्री अनिल वर्मा (जिला सिहोर, मध्य प्रदेश), 6. श्री पृथ्वी सिंह सोलन्की (जिला खरगोन, मध्य प्रदेश), 7. श्री दिलीप (जिला वाशिम, महाराष्ट्र), 8. श्री हरपाल सिंह चौहान (मध्य प्रदेश), 9. श्री सागर हिन्दुले (जिला कोल्हापुर महाराष्ट्र), 10.श्री गुलनारायण (मध्य प्रदेश), 11. श्री महन्तेश पुजर (मध्य प्रदेश), 12. श्री बलजीत सिंह (उत्तर प्रदेश), 13. श्री च. रंगखुपलियन (मणिपुर), तथा 14. श्रीजुझार सिंह (पंजाब).

तकनिकी सत्रों में प्रकुख रूप से फार्मर प्रोडूसर कंपनी बनाने, सोया बीज उत्पादन कार्यक्रम की गति बढाकर अधिक से अधिक किसानो तक नवीनतम पद्धतियों एवं किस्मों के फैलाव की बात की गई. इसी प्रकार सोया खाद्य उत्पादों को जनता में उपलब्धता के लिए स्टार्ट अप शुरू करने के लिए एग्री बिजनेस इन्कुबेशन केन्द्रों के माध्यम से सहायता के लिए आश्वासन दिया गया. बीज सोया महाकुम्भ के दुसरे दिन मध्य प्रदेश के 1000 से अधिक किसानों ने भाग लेकर कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा विशेषज्ञों से चर्चा के माध्यम से सोयाबीन की खेती में सुझाव प्रस्तुत किये.

ICAR-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान
खंडवा रोड, इंदौर -452001

F. No. Press & Publicity/Soya Mahakumbh/2022/5 Date: 29.05.2022

आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, सोयाबीन अनुसंधान एवं विकास सोसायटी, सोलिडारिडाड, भोपाल और सोपा इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में 29-31 मई, 2022 के दौरान आयोजित किये जा रहे "सोया महाकुम्भ" का देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के ऑडिटोरियम में आज उदघाटन हुआ. कार्यक्रम में पहले दिन इसमें सोयाबीन उत्पादक, वैज्ञानिक, विकास विभागों के अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 2500 लोगों ने भाग लिया. इसके उदघाटन समारोह में माननीय श्री कैलाश चौधरी, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री; श्री कमल पटेल, कृषि मंत्री, मध्य प्रदेश; डॉ त्रिलोचन महापात्रा, सचिव डेयर और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, माननीय श्री शंकर लालवानी, इंदौर से सांसद, भाकृअनुप-आईआईएसआर निदेशक डॉ नीता खांडेकर और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया.

प्रारंभ में, भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान की कार्यवाह निदेशक डॉ नीता खांडेकर ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और विभिन्न विधाओं का उपयोग करते हुए अनुसंधान जनित तकनीकियो एवं नवीनतम पद्धतियों को किसानों तक ले जाने के लिए संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. महापात्रा ने कहा कि सोयाबीन की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता पिछले कुछ दशकों से लगभग 1 टन प्रति हेक्टेयर है, जिसे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिये, विस्तार कर्मियों, किसानों, इनपुट डीलरों और सहायक सेवाओं में शामिल अन्य लोगों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि सोयाबीन की नई किस्मों का गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन में वृद्धि से ही सोयाबीन की उत्पादकता 20 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि 14,326 क्विंटल के ब्रीडर बीज उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया है जिससे आधार एवं प्रमाणित बीज उत्पादन कार्यक्रम में तेजी आएगी। उन्होंने विशेष रूप कहाँ कि सोयाबीन बीज स्थानापन्न दर के साथ साथ किस्मों की विविधता भी आवश्यक हैं. डॉ महापात्रा ने यह भी आशा व्यक्त की कि मध्य भारत के किसानों ने लगभग 2-3 टन / हेक्टेयर की उपज सीमा हासिल कर ली है जैसा कि फ्रंटलाइन प्रदर्शनों में परिलक्षित होता है। इसलिए, उन्होंने कहा कि किसानों और अन्य हितधारकों की क्षमता निर्माण के लिए कृषि प्रयास किये जाने चाहिए।

इस अवसर पर इंदौर के लोकप्रिय सांसद माननीय श्री शंकर लालवानी ने अपने संक्षिप्त संबोधन में बताया कि भारत सरकार ने उर्वरकों की कीमतों में वृद्धि नहीं होने दी, विशेष रूप से यूरिया, जो पौधों की वृद्धि के लिए एक प्रमुख तत्व है। उन्होंने आगे कहा कि केंद्र सरकार कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़, छोटे और सीमांत किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

इसी प्रकार विशिष्ठ अतिथि, मध्य प्रदेश के कृषि मंत्री श्री कमल पटेल ने अपने संबोधन में बताया कि मध्यप्रदेश के किसानों के लिए राज्य सरकार ने किसान केंद्रित नीतियां बनाई हैं. उन्होंने कहा कि एमएसपी के माध्यम से खरीद की अधिकतम सीमा को हटा दिया गया है जिससे राज्य के किसानों को लाभ हुआ है. उन्होंने फसल बीमा योजना पर प्रकाश डाला, जिससे पिछले दो वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश के किसानों को 17,000 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। उनके अनुसार, राज्य सरकार ने तीसरे सीजन की फसल यानी ग्रीष्म मूंग को बढ़ावा देने की योजना बनाई है, जिससे राज्य के किसानों की आय में भी योगदान होगा।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा संस्थान की "ईको फ्रेंडली सोया कटोरी" , सोयाबीन उत्पादकता पर वृद्धि के लिए तकनिकी बुलेटिन तथा 3s1Y परियोजना के अंतर्गत "ISKA सीड" को लांच कर कृषकों को समर्पित किया.

समारोह के मुख्य अतिथि, माननीय केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री कैलाश चौधरी ने देश की अर्थव्यवस्था में विशेष रूप से महामारी की स्थिति में कृषक समुदाय की कड़ी मेहनत और योगदान की सराहना की है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने कृषि के बजटीय आवंटन को बढ़ाकर 1,32,000 करोड़ कर दिया है जो 2014 के बाद से रिकॉर्ड वृद्धि है। इसमें से 65,000 करोड़ रुपये किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ के रूप में दिए जाते हैं, जिससे लगभग 50 लाख करोड़ किसानों को लाभ होता है। उन्होंने आगे बताया कि केंद्र सरकार विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से किसान की आय को दोगुना करने के लिए प्रतिबद्ध है। उनके अनुसार, छोटे और सीमांत किसानों को एक साथ आना चाहिए और अपनी उपज के उत्पादन, विपणन और प्रसंस्करण के लिए किसान उत्पादक संगठन (FPO) के रूप में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड के लिए लगभग 1 लाख करोड़ आवंटित किए हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के निर्माण के साथ-साथ मूल्यवर्धन के लिए प्रसंस्करण और भंडारण सुविधा के लिए है। श्री चौधरी ने देश की विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त 164 सोयाबीन किस्मों के विकास में कृषि वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उम्मीद जताई कि एक दिन ऐसा आएगा जब भारत की जीडीपी में कृषि का योगदान बढ़ेगा।